National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 329-333
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

श्रीनन्दन पाण्डेय
शोधच्छात्र,
तिलक महाविद्यालय औरैया, उ० प्र०

शोध-निर्देशक
डॉ० अंशुल दुबे
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी-
संस्कृत विभाग,
तिलक महाविद्यालय औरैया, उ०प्र०

Correspondence:
श्रीनन्दन पाण्डेय
शोधच्छात्र,
तिलक महाविद्यालय औरैया, उ० प्र०

'श्रीहनुमद्दूतम्' काव्य के आधार पर देवी सीता का स्वरूप

श्रीनन्दन पाण्डेय, डॉ० अंशुल दुबे

शोध सार-

भारत भूमि आदिकाल से नारी प्रतिभा की उद्गमस्थली रही है। इस धरा पर अनेक महाविभूतियों का आविर्भाव हुआ। इन महान् विभूतियों के द्वारा ज्ञान-परम्परा का आविर्भाव हुआ। इस ज्ञान में समाज तथा लोक मर्यादा का ज्ञान भी सन्निहित था; और इस ज्ञान को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे ले जाने का कार्य भी भारतीय नारियों ने किया। वेदों में लोपामुद्रा से लेकर वागाम्भृणी आदि ने ऋषिका की संज्ञा ग्रहण की, वहीं वेदेतर अनसूया से लेकर सीता तक अनेक स्त्रियों ने अपने चरित्र द्वारा समाज में आदर्श की स्थापना की। मनुष्य का जीवन बालू की भीत के समान क्षणभङ्गुर है, इसलिए उसे आने वाली पीढ़ियों को मार्ग दिखाने हेतु ऐसे साहित्य की आवश्यकता होती है, जिसमें सामाजिक जीवन को सन्मार्ग पर ले जाने की विलक्षण सामर्थ्य हो, जिसके पात्र सङ्कट के समय धैर्य धारण करने वाले, धर्मानुसार आचरण करने वाले तथा शरण में आए जनों की रक्षा करने वाले हों और जो श्रेष्ठ गुणों के भण्डार हों। श्रीहनुमद्दूतम् काव्य देवी सीता के इन्हीं गुणों को आधार रचा गया है। डॉ० हरिनारायण दीक्षित कृत श्रीहनुमद्दूतम् एक उत्तम ग्रन्थ है क्योंकि वह मानव जीवन के स्थायी मूल्यवान् गुणों को लेकर ही रचा गया है।

सन्केत शब्द - काव्य, पतिव्रता, अभिप्रेरिका, लोकमर्यादा, मर्मज्ञा, विचारशीला, चरित्र इत्यादि।

1. प्रस्तावना-

आदिकवि वाल्मीकि ने आदिग्रन्थ रामायण में देवी सीता के जिस उदात्त चरित्र का वर्णन करके समाज को एक आदर्श चरित्र का दर्शन कराया, वह धीरे-धीरे न केवल भारत के अपितु समस्त विश्व के प्राणियों के हृदय में बसता चला गया। आगे चलकर सीता का चरित्र इतना हृदयस्पर्शी हुआ कि जनसमुदाय उसमें देवत्व की भावना करने लगा। रामकथा में जनकनन्दिनी सीता का चरित्र एक आदर्श भारतीय नारी का चित्र प्रस्तुत करता है। आचार्य बलदेव उपाध्याय के शब्दों में-

"जनकनन्दिनी जानकी का नाम ज्यों ही हमारे श्रवण को रससिक्त बनाता है, त्यों ही हमारे लोचनों के सामने अलोकसामान्य पातिव्रत्र की मंजुल मूर्ति झूलने लगती है। उनके कथन-मात्र से हमारा हृदय आनन्दविभोर हो उठता है। उनसे आनन्द की स्फूर्ति होने के लिए क्या राम के आदर्श चरित्र के अनुशीलन की आवश्यकता पड़ती है ? हमारा हृदय राम-कथा से इतना स्निग्ध, रस-सिक्त तथा घुल-मिल गया है कि हमारे लिए राम और जानकी किसी अतीत युग की स्मृति न रहकर वर्तमान काल के जीवन्त प्राणी के रूप में परिणत हो गए हैं। इसीलिए रामायण को 'सिद्धरस' काव्य कहा गया है।"[1]

ऐसे निर्मल आचरण से युक्त कोमलाङ्गी सीता का जीवन अत्यधिक सुखमय नहीं रहा। उनके जीवन में पग-पग पर बाधाएँ आती रहीं, किन्तु उन्होंने अत्यन्त धैर्य के साथ उन्हें सहन किया। 'श्रीहनुमद्दूतम्' काव्य जनकनन्दिनी के शील, स्वभाव तथा पतिव्रत-धर्म को केन्द्र में रखकर लिखा गया है।

डॉ० हरिनारायण दीक्षित ने सन्देश काव्य की शैली में देवी सीता के द्वारा न केवल राम के प्रति, अपितु समस्त भारतीय समाज को आदर्श भारतीय नारी के गुणों का सन्देश दिया है। प्रायः सङ्कटकाल में ही मनुष्य के धैर्य और चरित्र की परीक्षा होती है।

देवी सीता ने अपने सङ्कटकाल में अपार धैर्य का परिचय देकर यह सिद्ध किया कि आदर्श भारतीय नारी किसी भी परिस्थिति से संघर्ष करने का साहस रखती है। डॉ० हरिनारायण दीक्षित कृत 'श्रीहनुमद्दूतम्' में देवी सीता के चरित्र की कुछ विशेषताएँ उदाहरण सहित प्रकट की जा रही हैं-

2. पति की प्रेमपात्र -

किसी भी स्त्री के लिए यह अत्यन्त गौरव की बात होती है कि उसका पति उस पर विशेष स्नेह रखता है। अपने प्राणप्रिय पति का प्रेम प्राप्त होने से प्रत्येक भारतीय नारी आत्मगौरव का अनुभव करती है। पतिवियोग की अवस्था में उसके लिए एक-एक क्षण युग के समान बीतता है। भारतीय जनमानस ही नहीं, अपितु समस्त विश्व के आदर्श समाज में किसी भी स्त्री के लिए पति प्राणों के समान होता है। पति प्रेम देने के कारण प्रियतम तथा व्यवहार में सखा होता है। अधिकार में स्वामी और कर्त्तव्य में भर्ता होता है। अतः अपनी पत्नी को विपत्तियों से बचाना पति का परम कर्त्तव्य है। श्रीराम उपर्युक्त सभी विशेषताओं से युक्त हैं, क्योंकि उन्होंने अब तक अपने कर्त्तव्यों का समुचित पालन किया है। इसलिए जानकीजी हनुमानजी के माध्यम से उनसे निवेदन करती हैं कि मैं अब तक आपके पराक्रम का स्मरण करके ही जीवन धारण कर रही हूँ—

नित्यं चावां तपनदिवसेऽकुर्व युग्मोचितानि॥[2]

परिहास और विनोद पति-पत्नी के मध्य स्नेह और आनन्द का प्रबल साधन है। सीता यह जानती हैं कि श्रीराम का उन पर एकनिष्ठ प्रेम है और उन्होंने एकपत्नीव्रत धारण कर रखा है। इसलिए सीता के अतिरिक्त वे किसी अन्य को पत्नी रूप में स्वीकार नहीं करेंगे। इसी कारण सीता ने श्रीराम से कुछ विनोदभाव से यह निवेदन किया कि केवल आपके प्रेम में अनुरक्त मैं सीता यदि दुर्भाग्यवश लङ्का में ही प्राण त्याग दूँ, तो आप मेरे कहने से अपने एकपत्नीव्रत का त्याग कर देना और सदा पति का हित चाहने वाली किसी दूसरी कुलीन कन्या से विवाह कर लेना, क्योंकि पत्नी के बिना संसार में मनुष्य को सुख और शान्ति प्राप्त नहीं होती—

तस्मात्खिन्ना तव हितमना भाग्यदोषाहता च
वच्मि त्वाहं मम वचनतो राम! जह्या व्रतं स्वम्।
कन्या चान्या पतिहितरता काऽपि पत्नी विधेया
जायाहीनो जगति न जनो निर्वृतिं याति कश्चित्॥[3]

चित्रकूट में निवास के दिनों में प्रायः श्रीराम और सीता एकान्त विहार किया करते थे। स्फटिक शिला पर सुन्दर पुष्पों से आभूषण बनाकर श्रीराम सीता का शृङ्गार किया करते थे। किन्तु आज वही सीता आभूषणों से रहित, मलिन वस्त्र धारण किए हुए निरन्तर अश्रुपात करती हैं। इतना ही नहीं, उस दुःखिनी को भयानक रूप वाली राक्षसियाँ राक्षसराज की आज्ञा से भयभीत भी किया करती हैं—

दूरे नीतस्तव तनुसरस्तोऽसुमीनो मदीयः
त्वत्स्नेहाम्बुप्रतुलतरणाभावपीडाकुलोऽस्ति।
यावन्नायं मरणमुपयात्यत्र लङ्काधरायां
तत्पूर्वं त्वं निजतनुसरस्स्नेहवारि क्षिपैनम्।[4]

प्रेममय श्रीराम सीता के लिए अनेक प्रकार के सम्बोधन प्रयुक्त करते हैं। विरह के दिनों में प्रेमपूर्ण बातें अधिक स्मरण आती हैं। श्रीराम सीता से असीम स्नेह करते हैं, इसलिए उन्हें प्राणवल्लभा, प्रियतमा, दयिता तथा कान्ता जैसे शब्दों से सम्बोधित करते हैं। अपने प्रिय के प्रेमपूर्ण सम्बोधनों को सीता निरन्तर स्मरण करती रहती हैं—

त्वं मे कान्ता त्वमसि दयिता प्राणमूलं त्वमेव
त्वं मे भार्या च हृदयगतिश्चक्षुराभा त्वमेव।
त्वय्यास्ते मे कुलतरुभवो राम! मामित्यवोचः
तत्ते सर्वं प्रणयगदितं नाथ! नित्यं स्मरामि॥[5]

'उत्तररामचरितम्' के तृतीय अङ्क में भी इसी भाव की समानता प्रस्तुत की गई है—

त्वं जीवितं त्वमसि मे हृदयं द्वितीयं
त्वं कौमुदी नयनयोरमृतं त्वमङ्ग।[6]

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि देवी सीता अपने पति के अत्यन्त स्नेह की अधिकारी हैं। एकपत्नीव्रती श्रीराम सीता के शील, स्वभाव तथा रूपलावण्य पर सदा मोहित रहते हैं।

3. पति वीरता पर विश्वास करने वाली-

विगत तेरह वर्षों से देवी सीता वनवास के दिनों में निरन्तर श्रीराम के साथ रही हैं और इस अवधि में उन्होंने श्रीराम के अनेक वीरतापूर्ण कार्यों को देखा है। इसके अतिरिक्त विवाह के समय ही उन्होंने धनुषभङ्ग के द्वारा श्रीराम के पुरुषार्थ और पराक्रम का परिचय प्राप्त कर लिया था। लङ्का में निवास के समय सीता राम के उसी बल और पौरुष का निरन्तर स्मरण करके जीवन धारण कर रही हैं। उन्हें यह अटल विश्वास है कि रावण कितना भी बलवान क्यों न हो और लङ्का कितनी भी दूर क्यों न हो, श्रीराम के लिए कोई भी कार्य असाध्य नहीं है। उनके लिए न सागर दुस्तर है और न ही दशानन अजेय। अतः दृढ़विश्वासी सीता श्रीराम के पौरुष के बल पर अपने पतिव्रत धर्म की रक्षा करती हुई जीवन धारण कर रही हैं। जो श्रीराम भयानक कर्म करने वाले सुन्द दैत्य की सन्तान ताड़का के पुत्र मारीच को अपने एक ही बाण से सौ योजन दूर समुद्र के जल में फेंक सकते हैं, उनके लिए रावण का वध कोई कठिन कार्य नहीं है। धर्मविरोधी मारीच के चचेरे भाई सुबाहु को भी यज्ञरक्षा के लिए यमलोक पहुँचाकर श्रीराम ने अनुपम यश प्राप्त किया है। राम के उत्साह को बढ़ाने के लिए सीता मारीच और सुबाहु की पराजय का उल्लेख करती हुई अपने पति से यह कहना चाहती हैं कि उन्हें उनके बाहुबल पर पूर्ण विश्वास है कि वे शीघ्र ही रावण के बन्धन से उन्हें मुक्त कराएँगे—

सौन्दो दैत्यो मनुजरिपुरेकेन बाणेन दूरं
मारीचोऽसौ जलधिसलिले क्षिप्त आसीत्त्वयैव॥[7]

देवी सीता ने श्रीराम के अतुलनीय बल का एक प्रमाण स्वयं अपनी आँखों से देखा है। धनुषयज्ञ के समय भगवान् शिव के विश्वविख्यात धनुष पिनाक का, जिसका निर्माण देवशिल्पी विश्वकर्मा ने किया था और जिसे भगवान् शिव ने त्रिपुरवध के लिए प्रयोग किया था, जब सभा में उपस्थित कोई भी वीर उठाना तो दूर, तनिक भी हिला न सका, तब श्रीराम ने सभा के मध्य उस प्रसिद्ध शिवधनुष को तोड़कर अपने पराक्रम का परिचय दिया और सीता का पाणिग्रहण किया। महर्षि विश्वामित्र, कुलगुरु वशिष्ठ तथा अगस्त्यमुनि आदि ने उन्हें अपने तप से प्राप्त समस्त दिव्य शस्त्र स्वेच्छा से प्रदान किए हैं। इसलिए श्रीराम अनेक प्रलयकारी दिव्यास्त्रों के धारक हैं।

देवी सीता उन्हें उन दिव्यास्त्रों का स्मरण कराते हुए कहती हैं कि उनके प्रयोग का यही उचित समय है। इसलिए हे नाथ! शीघ्र उनका प्रयोग करके अपनी कान्ता को इस विषम दशा से मुक्त कीजिए—

दिव्यैर्भव्यैर्बहुविधफलैरस्त्रशस्त्रैरमोघैः
नानाकारैरतुलजवनैर्भूषितो वर्तसे त्वम्।
कान्ताहेतोरपि तदुपयोगं भवान्नो करोति
अह्ने कस्मै वदतु भवता तानि संरक्षितानि॥[8]

इस प्रकार 'श्रीहनुमद्दूतम्' में अनेक ऐसे स्थल हैं, जहाँ देवी सीता ने श्रीराम के अतुलनीय पराक्रम का उल्लेख करते हुए उनके वीरता पर अपना विश्वास प्रकट किया है। भारतीय संस्कृति में यह श्रेष्ठ गुण रहा है कि पति अपनी पत्नी की प्रत्येक परिस्थिति में रक्षा करता है और पत्नी एकनिष्ठ भाव से पति के वीरता पर विश्वास रखती है। सीता आदर्श भारतीय नारी का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसलिए वे श्रीराम के बाहुबल पर विश्वास रखते हुए लङ्का में अपने दुःखपूर्ण दिन व्यतीत कर रही हैं।

इस प्रकार स्पष्ट होता है कि सीता को श्रीराम के बाहुबल पर अटूट विश्वास है। विषम परिस्थिति में रहने पर भी सीता का यह दृढ विश्वास तनिक भी विचलित नहीं हुआ, जो उनके उत्तम संस्कारों तथा आर्यगुणों के अनुरूप है। डॉ० दीक्षित ने देवी सीता के इस रूप को अपनी काव्यप्रतिभा से अत्यन्त कुशलता के साथ प्रकट किया है।

4. कुशल अभिप्रेरिका -

अभिप्रेरणा ऐसा गुण है, जिससे मनुष्य अपनी सामर्थ्य से भी अधिक फलदायक कार्य कर लेता है। महाभारत की कथा में विदुला नाम की रानी का आख्यान अभिप्रेरणा के प्रसङ्ग में अत्यन्त प्रसिद्ध है। उसमें वर्णन आता है कि विदुला रानी का औरस पुत्र सिन्धुराज से पराजित होकर घर में छिप जाता है—

विदुला नाम राजन्या जगर्हे पुत्रमौरसम्।
निर्जितं सिन्धुराजेन शयानं दीनचेतसम्॥[9]

अपने पुत्र को समझाती हुई रानी विदुला कहती हैं कि जिसके महान् और अद्भुत पुरुषार्थ तथा चरित्र की लोग चर्चा न करें, ऐसा निर्बल पुत्र किसी स्त्री को उत्पन्न नहीं करना चाहिए। मनुष्य को सदा उत्साही और परिश्रमी होना चाहिए। माता के उत्साहवर्धक वचनों को सुनकर सञ्जय युद्ध के लिए तैयार हो जाता है। इसी प्रकार जब अर्जुन युद्धभूमि में अपने स्वजनों को देखकर युद्ध न करने की बात कहते हैं, तब भगवान् श्रीकृष्ण उन्हें अपने प्रेरणादायक वचनों से धैर्य धारण कराते हुए उत्साहित करते हैं—

क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परन्तप ॥[10]

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि सङ्कटकाल में धैर्यवान् पुरुषों का भी धैर्य डगमगा जाता है और उन्हें अपनी शक्ति का स्मरण नहीं रहता। ऐसे समय में अभिप्रेरणा की आवश्यकता होती है।

श्रीराम नीतिज्ञ, धर्मपरायण और पराक्रमी हैं, किन्तु इस समय वियोगजनित दुःख से व्याकुल हैं। विपत्ति के समय ही स्त्री के स्त्रीत्व की परीक्षा होती है। 'श्रीरामचरितमानस' में भी कहा गया है—

धीरज धर्म मित्र अरु नारी।
आपद काल परिखिअहिं चारी॥[11]

अतः देवी सीता इस विपत्तिकाल में श्रीराम को मानसिक सहारा प्रदान करने के लिए एक कुशल अभिप्रेरक की भूमिका निभाती हैं, क्योंकि प्रिय के समान उपदेश देना भी काव्य का एक प्रयोजन माना गया है।

पञ्चवटी में शूर्पणखा के नासिका और कर्ण छेदन के बाद प्रतिशोध की अग्नि से दग्ध खर और दूषण विशाल राक्षसी सेना लेकर राम और लक्ष्मण का वध करने आते हैं, किन्तु श्रीराम अकेले ही न केवल उनकी सेना का संहार करते हैं, बल्कि अत्याचार के मूर्तिरूप खर और दूषण को भी यमलोक भेज देते हैं। श्रीराम के अतुलनीय बल की यह घटना सीता के हृदयपट पर सदा के लिए अंकित हो गई। हनुमानजी से निवेदन करती हुई सीता उस प्रसङ्ग का वर्णन करते हुए बताती हैं कि राम ने खर और दूषण को वैसे ही सरलता से मार डाला, जैसे क्रुद्ध सिंह किसी बैल को मार देता है। इसलिए श्रीराम से कहना कि यह रावण भी आपके द्वारा शीघ्र ही मारने योग्य है—

क्रुद्धस्सिंहो वृषभमिव हे राम! सद्योऽवधीस्त्वम्॥[12]

श्रीराम के पराक्रमपूर्ण कार्यों की कीर्ति चारों दिशाओं में फैली हुई है। सीताहरण के पश्चात् जब श्रीराम पत्नी की खोज करते हुए किष्किन्धा पहुँचे, तब वहाँ किष्किन्धापति बालि से भयभीत होकर ऋष्यमूक पर्वत पर रहने वाले सुग्रीव से उनकी मित्रता हुई। सुग्रीव की सहायता के लिए श्रीराम प्रतिज्ञा करते हैं—

सखा सोच त्यागहु बल मोरें।
सब बिधि घटब काज मैं तोरें॥[13]

संसार में साधारण मनुष्य भी आनन्द देने वाली अपनी प्रिय पत्नी पर असीम प्रेम करते हैं। फिर श्रीराम तो मर्यादा पुरुषोत्तम हैं, इसलिए उनका यह कर्त्तव्य है कि वे अपनी प्राणप्रिय पत्नी के प्राणों की रक्षा हेतु प्रयत्न करें। श्रीराम को प्रेरणा देती हुई देवी सीता हनुमान के माध्यम से सन्देश भेजते हुए इस तथ्य का उल्लेख करती हैं—

जायादेहे सुरतसुखदेऽप्यस्ति साधारणानां
गाढा प्रीती रविकुलमणे! भारते मानवानाम्।
स्वीयं स्नेहं शिथिलयसि किं राम! सीताकृते त्वं
हा किं जातं त्वमसि भुवने मानवेषूत्तमो ना॥[14]

संसार में उत्साह ऐसा गुण है, जो घोर विपत्ति में भी मनुष्य के लिए मार्ग बना देता है। कपटी शत्रु से छुटकारा पाने के लिए उस पर विजय प्राप्त करना ही एकमात्र उपाय है और उत्साह विजय का मुख्य कारण है। इसलिए धीर और वीर पुरुष उत्साह का साथ कभी नहीं छोड़ते। उत्साहयुक्त मनुष्य का विजयलक्ष्मी स्वयं वरण करती है। अतः आपको परिश्रमी पुरुष के समान भाग्य के अधीन रहने को अस्वीकार करते हुए, मेरे लिए विपत्ति में सहायक बनकर शत्रुवंश के विनाश का प्रयत्न करना चाहिए, क्योंकि परिश्रमी मनुष्यों के कार्य में सफलता निश्चित होती है—

उद्युक्तस्सन्नरिकुलवधे मानसं त्वं दधीथाः
कार्ये सिद्धिर्भवति नियतोद्योगिनां मानवानाम्॥[15]

इस प्रकार उपर्युक्त उदाहरणों और वचनों से स्पष्ट होता है कि देवी सीता एक कुशल अभिप्रेरक हैं। पूर्वजों द्वारा स्थापित वंशपरम्परा के पालन की बात हो अथवा श्रीराम द्वारा अपने पुरुषार्थ से प्राप्त

यशपूर्ण विजयगाथाएँ, सभी का उचित सन्दर्भ देकर जानकीजी ने श्रीराम का उत्साहवर्धन किया है। अनेक सूक्तिपूर्ण वचनों और शास्त्रीय मर्यादाओं का उल्लेख सीता की प्रतिभा तथा श्रेष्ठ संस्कारों का परिचय देता है। श्रीराम को सदा उत्साही बनाए रखने के पीछे मुख्य रूप से सीता की दो अभिलाषाएँ हैं— पहली यह कि उत्साहपूर्ण हृदय पर वेदना का प्रभाव कम पड़ता है, इसलिए श्रीराम को विरहवेदना की न्यून अनुभूति होगी; और दूसरी यह कि दैन्यावस्था में शारीरिक शक्ति क्षीण हो जाती है, जबकि संसार के सभी कार्य बलवान् शरीर से ही सिद्ध होते हैं—

'सर्वं कार्यं जगतिकठिनं पुष्टदेहेन साध्यम्'[16]

5. विचारशीला एवं लोकमर्यादा की मर्मज्ञा

'श्रीहनुमद्दूतम्' काव्य में वर्णित देवी सीता का रूप मुग्धा नायिका के रूप में दृष्टिगोचर होता है। उनके चरित्र में करुणा, प्रेम, कष्टसहिष्णुता तथा पातिव्रत्य जैसे दिव्य गुण सहज रूप से समाहित हैं। स्त्री का स्वभाव कैसा होना चाहिए, इसका एक आदर्श स्वरूप हमें सीता के रूप में प्रत्यक्ष दिखाई देता है। सीता जी का स्वाभिमान भारतीय नारी की निर्भीकता और आत्मबल का उज्ज्वल उदाहरण है। उनका आत्मबल उस समय विशेष रूप से प्रकट होता है, जब वे रावण के प्रलोभनों को अस्वीकार कर यह उद्घोष करती हैं कि या तो श्रीराम के भुजदण्ड अथवा दशानन की कृपाण ही मेरे कण्ठ का स्पर्श कर सकती है, अन्य कोई नहीं। ऐसे आत्मबल से युक्त पतिव्रता सीता विपत्ति के समय भी विचारों की गम्भीरता, उदात्तता और लोकमर्यादा का पूर्ण रूप से पालन करती हैं। विपत्ति में भी लोकमर्यादा का त्याग न करना भारतीय नारी के श्रेष्ठ संस्कारों का स्पष्ट परिचय है।

'श्रीहनुमद्दूतम्' में देवी सीता अशोकवाटिका में रावण की बन्दिनी हैं, फिर भी वे अपने पतिव्रत धर्म का पूर्ण रूप से पालन कर रही हैं, किन्तु उन्हें यह आशंका रहती है कि कामासक्त रावण यदि किसी दिन क्रुद्ध होकर निरंकुश हो गया तो मर्यादा रक्षा के लिए प्राण त्यागने के अतिरिक्त कोई उपाय नहीं बचेगा। सौभाग्य से अभी तक वह रावण शाप के भय से अनुचित चेष्टा नहीं कर रहा है—

सौभाग्यं यन्नहि दशमुखश्शापभीतो बलेन
तं नेच्छन्त्यां लषितवनितायां प्रवृत्तिं करोति।
किन्तु क्रुद्धो विफलमदनो निर्दयो राक्षसोऽयं
रक्षन्तीं तां स्वपतिपदवीं जीवितां नो जहाति॥[17]

देवी सीता को अपने कुल की इस लोकमर्यादा का पूर्ण ज्ञान है, इसलिए उनके मन में यह आशंका उत्पन्न होती है कि कहीं रावण को ब्राह्मण कुलोत्पन्न मानकर श्रीराम उसे अवध्य न समझ लें। इस कारण वे श्रीराम से निवेदन करती हैं कि यद्यपि रावण महर्षि पुलस्त्य के वंश में उत्पन्न है, किन्तु कर्ममार्ग में जातिभेद का विचार त्याज्य होता है—

शङ्कां हित्वा नृपकुलमणे पाल्यतां क्षात्रधर्मः
कर्मालोके निपुणमतिनोपेक्ष्यते जातिवादः॥[18]

'आचारः परमो धर्मः' यह धर्मशास्त्रीय वचन इस तथ्य का प्रमाण है कि आचारहीन व्यक्ति चाहे जितना वेदाध्ययन कर ले या कितना भी विद्वान क्यों न हो, वह सम्मान और पवित्रता का अधिकारी नहीं होता। वेद भी आचरण की शुद्धता के आधार पर ही पवित्रता का बोध कराते हैं। रावण पापपूर्ण आचरण वाला है, इसलिए वेदज्ञान भी उसे शुद्ध नहीं कर सकता। इस धर्ममर्यादा को देवी सीता भलीभाँति जानती हैं, इसलिए वे श्रीराम से कहती हैं—

वेदज्ञानं प्रति नहि रिपोस्त्वं विचारं विदध्याः
पापाचारं कमपि न जनं वेदविद्या पुनीते॥[19]

कृतघ्नता महापाप है, यह लोकमर्यादा सीता भलीभाँति जानती हैं। इसलिए वे इस बात से प्रसन्न हैं कि श्रीराम ने पहले दुःखित सुग्रीव की सहायता की है। सुग्रीव राजा होने के साथ-साथ विद्वान भी हैं। जब साधारण व्यक्ति भी मित्र के उपकार को नहीं भूलते, तब सुग्रीव तो एक राजा हैं—

महाकवि कालिदास ने भी 'मेघदूतम्' में इसी भाव की पुष्टि की है—

न क्षुद्रोऽपि प्रथमसुकृतापेक्षया संश्रयाय
प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पुनर्यस्तथोच्चैः॥[20]

सामाजिक मर्यादाओं के अनुसार यह प्रत्येक सज्जन का कर्तव्य है कि वह दुष्टों द्वारा पीड़ित प्रत्येक स्त्री की रक्षा करे, चाहे वह परिचित हो या अपरिचित। किन्तु यदि वह स्त्री अपनी ही पत्नी हो तो यह कर्तव्य और भी अनिवार्य हो जाता है। देवी सीता श्रीराम से इसी लोकधर्म के पालन का आग्रह करती हैं—

लोके दीना बलविरहिता दुष्टसन्त्रास्यमाना
कापि स्त्री स्यात्तदरिकरतस्त्रायते सा नरेण।
स्वोढां भार्यामनिशमनुगां सङ्कटापन्नलज्जां
स्वीयां सीतां द्विषदपहृतां त्रायसे राम! किन्नो ?॥[21]

इस प्रकार उपर्युक्त गुणों के आधार पर कहा जा सकता है कि देवी सीता प्रत्येक परिस्थिति में धैर्य धारण करने वाली, विचारशील तथा लोकमर्यादा का पालन करने वाली एक आदर्श भारतीय नारी हैं।

6. प्रतिव्रता आर्यललना-

गोस्वामी तुलसीदासजी ने पातिव्रत धर्म की व्याख्या करते हुए कहते हैं कि-

एकइ धर्म एक ब्रत नेमा।
कायँ बचन मन पति पद प्रेमा॥[22]

भारतीय जनमानस में देवी सीता का मनोहर चरित्र एक आदर्श पतिव्रता स्त्री के रूप में गहराई से प्रतिष्ठित है। रावण द्वारा अनेक प्रलोभन दिए जाने पर भी जब सीता उसका प्रस्ताव स्वीकार नहीं करतीं, तब वह दो मास का समय देकर अपनी राक्षसियों से उन्हें समझाने को कहकर चला जाता है। राक्षसियों के द्वारा प्रताड़ित किए जाने पर सीता उनसे कहती हैं कि उस लोकनिन्दित निशाचर रावण को तो मैं बायें चरण से भी स्पर्श नहीं कर सकती, फिर उसे चाहने की बात ही क्या—

चरणेनापि सव्येन न स्पृशेयं निशाचरम्।
रावणं किं पुनरहं कामयेयं विगर्हितम्॥[23]

'श्रीहनुमद्दूतम्' में देवी सीता के पतिपरायण स्वरूप के अनेक स्थल पर दर्शन होते हैं। श्रीराम को प्रेषित संदेश में वे अपनी एकनिष्ठ पति-भक्ति का परिचय देती हैं—

एषा सीता तव च दयिता देहमोक्षं विधाता
चेतस्यन्यं क्षणमपि नरं किन्तु नैष्टा कदापि।
जातोद्वाहा निजपतिरता भारतीया च योषा
स्वापेऽप्यन्यं कमपि पुरुषं सेवते नो सकामा॥[24]

पतिव्रता सीता अपने पति के स्वास्थ्य की भी निरन्तर चिन्ता करती हैं। वियोगावस्था में सतत चिन्तित श्रीराम यदि उचित शक्तिवर्धक भोजन और विश्राम नहीं करेंगे तो उनका शरीर दुर्बल हो जाएगा, जबकि रावण के साथ युद्ध हेतु उन्हें पुष्ट शरीर की आवश्यकता है। इसलिए वे श्रीराम को चिन्ता न करने तथा उचित आहार और विश्राम करने का उपदेश देती हैं। सीता श्रीराम के साथ वनवास में इसलिए आई थीं कि उन्हें सेवा का पूर्ण अवसर प्राप्त हो सके, और तेरह वर्षों तक उनका यह संकल्प निरन्तर चलता भी रहा, किन्तु अन्तिम समय में विधाता ने वह व्रत भङ्ग कर दिया और एक नई विपत्ति उत्पन्न हो गई। उचित ही कहा गया है कि विधाता की इच्छा ही सर्वाधिक बलवान होती है। इस तथ्य का 'श्रीहनुमद्दूतम्' में सुन्दर वर्णन मिलता है—

सेवां कर्त्तुं तव तु विपिने चित्तसङ्कल्प आसीत्,
हा जातोऽसौ चरमसमये राम! भग्नो मदीयः।
नेष्टं चासीदे यदतिविषमं वर्तते तत्समक्षं
लोके नूनं भवरचयितुर्धातुरिच्छा बलिष्ठा॥[25]

इस प्रकार देवी सीता के दृढ़ पातिव्रत के अनेक रूप 'श्रीहनुमद्दूतम्' के विविध प्रसङ्गों में दिखाई देते हैं। उनका एकनिष्ठ पातिव्रत उन्हें आदर्श भारतीय नारी के रूप में जनमानस में स्थापित करता है। वे निरन्तर पति का चिन्तन करती हैं, वाणी से उनके नाम का स्मरण करती हैं और मन-वचन-कर्म से उनकी सेवा में संलग्न रहती हैं, जिससे 'काय बचन मन पति पद प्रेमा' की उक्ति पूर्णतः चरितार्थ होती है।

7. निष्कर्ष

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट होता है कि सीता पतिव्रता आर्यललना के समस्त शुभ गुणों से युक्त हैं। डॉ० दीक्षित ने अपनी काव्य-प्रतिभा से देवी सीता के जिस स्वरूप का चित्रण किया है, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। यदि सीता पति के प्रति पूर्णतः समर्पित पतिव्रता हैं, तो श्रीराम भी उन पर अनुरक्त एकपत्नीव्रती हैं। पति की प्रिय, विचारशीला तथा मर्यादा की ज्ञाता, पति का उत्साहवर्धन करने वाली कुशल प्रेरिका भी हैं। श्रीराम के अतुल पराक्रम पर उनका विश्वास अडिग है। अतः कहा जा सकता है कि 'श्रीहनुमद्दूतम्' में वर्णित देवी सीता का चरित्र एक आदर्श पतिपरायणा भारतीय नारी के समस्त गुणों से युक्त है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(1) उपाध्याय आचार्य बलदेव (लेखक), सं० 2001, संस्कृत साहित्य का इतिहास, प्रकाशन शारदा निकेतन वाराणसी

(2) दीक्षित डॉ० हरिनारायण प्रणीत, सं० 1987, श्रीहनुमद्दूतम्, ईस्टर्न बुक लिंकर्स न्यू जवाहरनगर, दिल्ली

(3) भवभूति महाकवि प्रणीत, आचार्य द्विवेदी पद्मश्री डॉ० कपिलदेव (संस्कृत टीका एवं हिन्दी अनुवाद), सं० 1995, उत्तरराम-चरितम्, प्रकाशक रामनारायणलाल विजयकुमार, इलाहाबाद

(4) तुलसीदास गोस्वामी (रचयिता), पोद्दार हनुमान प्रसाद (टीकाकार), संवत्० 2076, श्रीरामचरितमानस, प्रकाशक एवं मुद्रक-गीताप्रेस, गोरखपुर

(5) कालिदास महाकवि प्रणीत, त्रिपाठी डॉ० रमाशंकर (व्याख्याकार एवं संपादक) सन् 2000, मेघदूतम्, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

(6) वाल्मीकि महर्षि प्रणीत, संवत् 2070, रामायण (प्रथम खण्ड), प्रकाशक एवं मुद्रक गीताप्रेस, गोरखपुर

(7) वेदव्यास महर्षि प्रणीत, पाण्डेय शास्त्री रामनारायणदत्त (अनुवादक), संवत् 2053, महाभारत, तृतीय खण्ड (उद्योगपर्व और भीष्मपर्व) प्रकाशक गीताप्रेस, गोरखपुर

(8) गोयन्दका जयदयाल(भाषाटीकासहित), सं० 2080, श्रीमद्भगवद्गीता, प्रकाशक एवं मुद्रक गीताप्रेस, गोरखपुर

पादटिप्पणी:

[1] संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय पृष्ठ- 30

[2] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 31

[3] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 56

[4] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 63

[5] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 74

[6] उत्तररामचरितम् 3/26

[7] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 10

[8] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 54

[9] महाभारत उद्योग पर्व अध्याय 133 श्लोक -4

[10] श्रीमद्भगवद्गीता 2/3

[11] श्रीरामचरितमानस अरण्यकाण्ड दोहा सं० 5/4

[12] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 17

[13] श्रीरामचरितमानस किष्किन्धाकाण्ड दोहा 7/5

[14] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 33

[15] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 52

[16] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 47

[17] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 26

[18] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 37

[19] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 39

[20] मेघदूतम् पूर्वमेघ श्लोक- 17

[21] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 75

[22] श्रीरामचरितमानस अरण्यकांड दोहा- 5/5

[23] श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण सुन्दरकाण्ड 26/8

[24] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 43

[25] श्रीहनुमद्दूतम् श्लोक- 48